आज इस्राएल की ओर लौटना पहले से कहीं अधिक कठिन है

यशायाह 10:22

“क्योंकि हे इस्राएल, चाहे तेरे लोग समुद्र की बालू के समान हों, तौभी उनमें से केवल एक शेष भाग ही लौटेगा। विनाश ठहराया
गया है, और वह धर्म से उमड़ पड़ेगा।”

अतीत में, जब इस्राएल को बंदी बनाकर ले जाया गया—चाहे मिस्र में हो या बाबुल में—लोग यह मानते थे कि उनकी भूमि में वापसी हमेशा उसी प्रकार होगी: किसी मूसा जैसे परमेश्वर द्वारा चुने गए भविष्यवक्ता के द्वारा एक महान उद्धार। वे आशा करते थे कि परमेश्वर फिर से चमत्कारिक रूप से हस्तक्षेप करेगा, पूरे राष्ट्र को बहाल करेगा और उन्हें पूर्ण रूप से उनके घर लौटा लाएगा।

परंतु परमेश्वर की योजना बदल गई।

अपने भविष्यवक्ताओं के द्वारा उसने उन्हें चेतावनी दी कि आने वाली पुनःस्थापनाएँ पहले जैसी नहीं होंगी। उसने धैर्यपूर्वक उन्हें मन फिराने के लिए बुलाया, उनसे आग्रह किया कि वे अपने दुष्ट मार्गों को छोड़ दें। लेकिन उन्होंने इंकार कर दिया। चेतावनियों को सुनने के बजाय उन्होंने परमेश्वर के दूतों को

सताया—कुछ को पीटा गया और कुछ को मार डाला गया (देखें 2 इतिहास 36:15–16; मत्ती 23:37)।

अंततः न्याय आया। इस्राएल के दस उत्तरी गोत्र अश्शूर द्वारा बंदी बना लिए गए (2 राजा 17), और वे आज तक लौटकर नहीं आए। वे अन्यजातियों में मिल गए और इतिहास से लुप्त हो गए—जिन्हें सामान्यतः “इस्राएल के खोए हुए गोत्र” कहा जाता है। बाद में दक्षिणी राज्य यहूदा को राजा नबूकदनेस्सर द्वारा बाबुल ले जाया गया (2 राजा 25)। और यद्यपि यहूदा की संख्या बहुत थी, फिर भी सत्तर वर्षों के बाद केवल एक छोटा सा अवशेष ही लौटा (एज्रा 1–2)।

यह अवशेष उनकी धार्मिकता के कारण नहीं, बल्कि परमेश्वर की दया के कारण सुरक्षित रखा गया—ताकि उस वंश को बनाए रखा जा सके जिससे मसीह उत्पन्न होने वाला था। जैसा कि प्रेरित पौलुस लिखता है:

रोमियों 9:27–29

“यशायाह इस्राएल के विषय में पुकारकर कहता है: ‘यदि इस्राएलियों की संख्या समुद्र की बालू के समान भी हो, तो भी उनमें से केवल अवशेष ही उद्धार पाएगा। क्योंकि प्रभु अपना

वचन पृथ्वी पर पूरा करेगा, और वह शीघ्रता से करेगा।’ और जैसा यशायाह ने पहले कहा था: ‘यदि सेनाओं के प्रभु ने हमारे लिए
कुछ संतान न छोड़ी होती, तो हम सदोम के समान हो जाते और अमोरा
के तुल्य ठहरते।’”

यह कहानी केवल इतिहास नहीं है—यह एक भविष्यवाणी-सदृश नमूना है। पौलुस, यशायाह को उद्धृत करते हुए, इन पुराने नियम की सच्चाइयों को नए वाचा की कलीसिया पर लागू करता है। शारीरिक इस्राएल परमेश्वर के आत्मिक लोगों की छाया है—वे जो मसीह में हैं। जो उनके साथ हुआ, वह हमारे लिए चेतावनी के रूप में है।

1 कुरिन्थियों 10:11

“ये सब बातें उनके साथ उदाहरण के रूप में घटीं, और हमारे लिए,
जिन पर युगों का अंत आ पहुँचा है, चेतावनी के लिये लिखी
गईं।”

जब इस्राएल मूर्तिपूजा और आत्मिक भ्रष्टता में गिर पड़ा, तो उन पर न्याय शीघ्र आया। इसी प्रकार यीशु और उसके प्रेरितों ने अंत से पहले कलीसिया में एक बड़े पतन की भविष्यवाणी की (देखें मत्ती 24:10–12; 2 थिस्सलुनीकियों 2:3)। शत्रु ने गेहूँ के बीच

कुकर्मी (झूठे विश्वासियों) बो दिए हैं, और अंतिम कटनी तक दोनों साथ-साथ बढ़ते रहेंगे (मत्ती 13:24–30)।

आज संसार भर में तीन अरब से अधिक लोग स्वयं को मसीही कहते हैं—जो कभी भी शारीरिक इस्राएल की संख्या से कहीं अधिक है। परंतु जैसे प्राचीन समय में था, वैसे ही आज भी संख्या विश्वासयोग्यता का माप नहीं है। इस विशाल भीड़ में से केवल एक छोटा सा अवशेष ही वास्तव में मसीह के प्रति विश्वासयोग्य है।

लूका 12:32

“हे छोटे झुंड, मत डर; क्योंकि तुम्हारे पिता को यह भाया है
कि तुम्हें राज्य दे।”

यीशु ने अपनी कलीसिया को किसी महान भीड़ के रूप में नहीं, बल्कि एक छोटे झुंड के रूप में वर्णित किया। बहुत से बुलाए जाते हैं, पर थोड़े ही चुने जाते हैं (मत्ती 22:14)। वर्तमान युग आत्मसंतोष का नहीं, बल्कि आत्म-परीक्षा और मन फिराव का समय है। संसार का आकर्षण पहले से कहीं अधिक शक्तिशाली हो गया है, और बहुतों की पहली प्रेम-आग ठंडी पड़ती जा रही है।

आज प्रभु की ओर लौटना—पहले प्रेम को नवीनीकृत करना, पवित्रता में चलना और पाप को त्यागना—पहले विश्वास करने के समय की तुलना में कहीं अधिक कठिन हो गया है। आत्मिक वातावरण अधिक प्रदूषित हो चुका है, कलीसिया अधिक समझौता-प्रिय बन गई है, और ध्यान भटकाने वाली बातें अधिक तीव्र हो गई हैं। केवल परमेश्वर की अनुग्रह और सामर्थ्य से ही कोई स्थिर रह सकता है।

हमें उस विश्वासयोग्य अवशेष का हिस्सा होना चाहिए। प्रभु अपने लोगों को बुला रहा है कि वे पाप को छोड़ें, पूरी रीति से उसकी ओर फिरें, और अपनी आँखें अनंतकाल पर लगाए रखें।

क्योंकि मसीह की वापसी निकट है।

किसी भी क्षण उठाया जाना (रैप्चर) घटित हो सकता है—सच्ची कलीसिया का अचानक उठा लिया जाना (1 थिस्सलुनीकियों 4:16–17)। कुछ के लिए यह आनंद और पुनर्मिलन का दिन होगा, और कुछ के लिए अवर्णनीय पछतावे का दिन।

मत्ती 24:40–42

“तब दो मनुष्य खेत में होंगे; एक ले लिया जाएगा और दूसरा
छोड़ दिया जाएगा। इसलिए जागते रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते

कि तुम्हारा प्रभु किस दिन आएगा।”

प्रभु हमें सहायता करे कि हम जागते हुए, विश्वासयोग्य और तैयार पाए जाएँ।

Share on:
WhatsApp